4

समापन

(फिलेमोन 2125)

फिलेमोन के नाम पौलुस के पत्र में मुख्य चर्चा आयत 20 का कठिन भाग निकल गया था और शेष भाग में जो कहा गया था उसे संक्षिप्त करना, भविष्य की यात्रा की योजनाओं को बताना, सलाम देना और आशिष की अन्तिम बात कहनी थी। यदि पौलुस को इस पत्र के लिखने में कोई संकोच था तो आयत 21 के संक्षिप्त शब्दों पर पहुंचकर वह अपने शेष विचार फिलेमोन को लिखकर खुली सांस, आराम और आनन्द कर सकता था।

21-25

[21]मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर, तुझे लिखता हूं और यह जानता हूं, कि जो कुछ मैं कहता हूं, तू उस से कहीं बढ़कर करेगा।

[22]और यह भी, कि मेरे लिए उतरने की जगह तैयार रख; मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा।

[23]इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है। [24]और मरकुस और अरिस्तर्खुस और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं इन का तुझे नमस्कार।

[25]हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे। आमीन।

आयत 21. भरोसा रखकर यह संकेत देते हुए कि कोई निर्विवादित तथ्य है, यूनानी भाषा में पूर्ण कृदंत है। पौलुस के लिए यह तय मामला था। उसे विश्वास हो गया था कि फिलेमोन उसके पत्र का सही उत्तर देगा।

तेरे आज्ञाकारी होने का इस मसीही स्वामी को उसके भगौड़े दास के विषय में लिखने में पौलुस ने संतुलित कार्य करने का एक और उदाहरण दिया। उसने जो सही है करने के लिए फिलेमोन को ''आदेश'' देने से मना कर दिया था और उसके बजाय उसने उससे ''विनती'' करना चुना था (आयतें 8, 9)। तो फिर यहां पर किस अर्थ में ''आज्ञाकारी'' शब्द का इस्तेमाल कर रहा था? इस यूनानी संज्ञा शब्द *hupakoē* का इस्तेमाल कई बार पौलुस द्वारा परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं को मानने के लिए किया गया (रोमियों 5:19; 6:16)। सम्भवतया पौलुस यहां फिलेमोन के इस मामले में पौलुस की विशेष ''आज्ञा'' को मानने के बजाय जो उसने दी थी कि उनेसिमुस के साथ क्या किया जाना चाहिए, इस मामले में परमेश्वर की आज्ञा को मानने की बात लिख रहा था। पौलुस ने आज्ञा नहीं दी थी परन्तु निश्चय ही उसने फिलेमोन से परमेश्वर का आज्ञाकार होने की उम्मीद थी।

आयत 16 में पौलुस ने लिखा कि उसने उनेसिमुस को कुलुस्से में ''दास से भी उत्तम''

के रूप में भेजा था। आयत 21 में उसने भरोसा जताया कि फिलेमोन जो उससे कहा गया है **उससे कहीं बढ़कर करेगा।** बहुत से टीकाकार अनुमान लगाते हैं कि पौलुस के मन में हो या फिलेमोन के कानों में, ''बढ़कर'' का क्या अर्थ हो सकता है। क्या पौलुस यह संकेत दे रहा था कि फिलेमोन को चाहिए कि उनेसिमुस को छोड़ दे और रोम में पौलुस के साथ काम करने के लिए उसे वापस भेज दे। बेशक पौलुस की आशा ऐसे ही थी, चाहे उसका ईरादा अपने वाक्य रचना में ऐसी आशा जताने का था या नहीं। इस कथन में जो कुछ भी पता चलता है उससे स्पष्ट है कि पौलुस ने उनेसिमुस को और फिलेमोन के नाम पत्र बड़े भरोसे से भेजा था।

आयत 22. यह भी, कि मेरे लिए उतरने की जगह तैयार रख। यह समर्थन मांगने से पत्र के अन्त में दो बातें पूरी हुईं। पहली इससे पौलुस की इच्छा का और फिलेमोन और कुलीस्से की इच्छा का आने की आशा का पता चला। दूसरा अपने घर में रहने के लिए जगह तैयार करके पौलुस ने इस विचार को फिर से ज़ोर दिया कि वह अभी भी फिलेमोन को ''प्रिय भाई'' और ''सहकर्मी'' मानता है। प्राचीन जगत में दोनों और से आतिथ्य सतकार से एक-दूसरे के प्रति आदर का पता चलता था। इससे न केवल यात्री के लिए मेज़बान की स्वीकृति का संकेत मिला बल्कि यात्री के मेज़बान की स्वीकृति का भी संकेत मिला। उनेसिमुस के मामले में इन दोनों के बीच चाहे जो भी हुआ हो पर उनकी संगति मज़बूत रही थी।

मुझे आशा है, कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा, पौलुस ने कहा आयत 3 के बाद से यहां पर पहली बार वह फिलेमोन के अलावा दूसरों से बात कर रहा था। यूनानी धर्मशास्त्र में ''तुम्हारी'' और ''तुम्हें'' दोनों ही बहुवचन हैं। एक बार फिर से अफफिया, अर्खिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया को बातचीत में लाया गया। पौलुस ने माना कि उनसे मिलने का अवसर परमेश्वर की इच्छा से होना था। जिस कारण मिलना केवल उनकी प्रार्थनाओं के द्वारा ही सम्भव होना था।

आयत 23. फिर पौलुस फिलेमोन को यह पत्र लिखते समय अपने साथ रोम में रहने वाले लोगों की ओर से सलाम देने लगा। यहां बताए गए सब लोगों का नाम कुलुस्से की कलीसिया के नाम पौलुस के पत्र लिखते समय भी उसके साथ दिखाया गया है (कुलुस्सियों 4:10-14)। **इपफ्रास** ही वह व्यक्ति था जिसने कुलुस्से में पहले सुसमाचार सुनाया था। पौलुस ने कुलुस्सियों के पत्र में उसे ''तुम ही में से'' बताया (कुलुस्सियों 4:12)। पौलुस के फिलेमोन को लिखते समय इपफ्रास पौलुस का **मसीह यीशु में साथी कैदी** था शायद पौलुस के नज़रबन्द रहने के समय उसके साथ ही था (प्रेरितों 28:30, 31)। **तुझे नमस्कार** इस आयत में ''तुझे'' के लिए एक वचन रूप का अद्‌भुत रूप से लौटना है। यह इपफ्रास की ओर से फिलेमोन के नाम व्यक्तिगत सलाम लगता है।

आयत 24. सलाम भेजने वालों की सूची बरनबास की मौसेरे भाई यूहन्ना **मरकुस** के साथ जारी रहती है। पौलुस को चाहे आरम्भ में उसने निराशा दी थी (प्रेरितों 15:37, 38), परन्तु बाद में वह प्रेरित के लिए भरोसा करने के योग्य और कीमती सम्पत्ति बन गया था (2 तीमुथियुस 4:11)। **अरिस्तर्खुस** ''थिस्सलुनीके का मकिदूनी'' था (प्रेरितों 27:2) जो इफिसुस में दंगे के समय से पौलुस के साथ था। कुलुस्सियों 4:10 में पौलुस ने उसे ''मेरे साथ कैदी'' बताया। **देमास** को अफ़सोस के साथ ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है जिसने प्रेरित के साथ

कुछ समय बिताया परन्तु बाद में ''इस संसार को प्रिय जानकर'' उसे छोड़ गया (2 तीमुथियुस 4:10)। ''प्रिय वैद्य'' **लूका** (कुलुस्सियों 4:14) एक अन्यजाति था जिसने पौलुस से भी अधिक नये नियम का भाग लिखा। आने वाली अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए कुछ साल बाद पौलुस ने लिखा, ''केवल लूका मेरे साथ है'' (2 तीमुथियुस 4:11)। पौलुस ने इन सभी को **मेरे सहकर्मी** बताया जो फिलेमोन के लिए उसने कहा था।

आयत 25. पत्र का समापन पौलुस के विशेष ढंग, आशीष की बात के बाद होता है। **हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे** ''तुम्हारी'' यहां फिर बहुवचन है, जिस कारण पत्र का अन्त वैसे ही अकेले फिलेमोन के बजाय एक बड़े स्रोतागण को ध्यान में रखकर होता जैसे इसका आरम्भ हुआ था। ''आत्मा'' एक वचन है और यह मनुष्य की आत्मा या जीव के सम्बन्ध में है। इसका अर्थ ''आत्मिक जीवों के रूप में तुम सब'' लगता है।

जोसेफ़ ऐ फिज़ाइमर ने फिलेमोन पर अपनी टिप्पणी को मार्टिन लूथर के इस उद्धरण से ठीक ही समाप्त किया है:

> इस प्रकार हमारे पास एक निजी पत्री है जिससे बहुत कुछ सीखा जाना चाहिए कि भाइयों की सराहना कैसे की जाए, यानी इकलीसिया के लिए नमूना कैसे दिया जाए उनकी देखभाल कैसे करें, जो गिर जाते हैं और गलती करने वालों को कैसे सुधारें; क्योंकि मसीह का राज्य अनुग्रह और दया का राज्य है। ...[1]

प्रासंगिकता

किसी में विश्वास करने की सामर्थ

डेल वासरमैन का संगीतमय नाटक *मैन ऑफ़ ला मैनचा* का विमोचन 22 नवंबर 1965 न्यूयॉर्क में आरम्भ हुआ और अविश्सनीय 2,329 नाटकों तक चला। सरवैंटेट के साहित्यक स्पेनी नावल *डॉन क्विग्ज़ोट* पर आधारित,[2] इस में बहादुरी के युग को बहाल करने और बुराई का सामना करने की खोज में लगे एक व्यक्ति की कहानी है। रास्ते में डॉन क्विग्ज़ोट एक सराए में एक शाम रुक जाता है जहां उसे एक अशिष्ट, असभ्य, अनैतिक सेविका अलडोज़ा मिलती है। डॉन क्विग्ज़ोट की नज़रों में वह उनके ''सपनों की'' साफ़ सुथरी पतिवरता स्त्री थी। उसने उसके भले नाम में बड़ी लड़ाइयां लड़ने का निश्चय किया। अलडोंज़ा को लगा कि वह पागल है और दूसरे लोगों की तरह ही वह उसका मज़ाक उड़ाने लगी।

नाटक में बाद में डॉन क्विग्ज़ोट का दिल टूट जाता है। वह मोहभंग हुए एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में मरने के लिए घर लौट जाता है। अलडोंज़ा उसके घर उसके पीछे आती है और उससे फिर से सपने देखकर उससे विनती करती है कि वह डलजिनिया कहकर पुकारे। क्विग्ज़ोट अपनी मृत्युशइया से उठकर मूर्छित होकर मर जाने से पहले अपने सपने का गीत फिर से गाता है। जब लोग अलडोंज़ा को कमरे से निकालने के लिए आते हैं तो वह उन्हें धक्के मारते हुए दिलेरी से कहती है, ''मेरा नाम डलज़िनिया है।''

लोग आम तौर पर उम्मीद के स्तर से ऊपर उठ जाते हैं या नीचे डूब जाते हैं। जब हम लोगों में बेहतरीन बात देखते हैं, तो कई बार वे अपने आपको उसी तरीके से देखने लगते हैं। पौलुस

ने फिलेमोन को हमारा भाई और सकर्मी कहा और पवित्र लोगों के मनों को हरा भरा करने वाले के रूप में उसकी श्रेष्ठ प्रतिष्ठा के लिए उसकी सराहना की। उसके फिलेमोन को आश्वस्त किया कि उसे उनेसिमुस के बारे में सही काम करने के लिए उसके आज्ञा मानने में भरोसा है। पत्र के अन्त में पाठक को इस आशा के साथ छोड़ दिया जाता है कि फिलेमोन पौलुस के ऊंचे दर्शन के साथ जीवन जिया।

टिप्पणियां

[1]जोसेफ ए. फिज़मायर, *द लैटर टू फिलेमोन,* द एंकर बाइबल, अंक 34सी (न्यू यॉर्कः डबलडे, 2000), 126. [2]देखें मिगुल डे सर्वेंटेस सावेदरा, *डॉन क्विसक्रोट,* अनु. एडिथ ग्रॉसमैन, विद एन इंट्रोडक्शन बाय हैरोल्ड ब्लूम (न्यू यॉर्कः इको, 2003)।